पाठ्यक्रम विवरण

1. पाठ्यक्रम का शीर्षक : मुर्गी पालन
2. पाठ्यक्रम की भाषा : हिन्दी
3. पाठ्यक्रम का प्रकार : प्रमाण पत्र (सर्टिफिकेट)
4. पाठ्यक्रम की पद्धति : सर्टिफिकेट
5. पाठ्यक्रम की अवधि : 3 माह (90 दिन)
6. पात्रता : मान्यता प्राप्त बोर्ड से दसवीं पास
7. पाठ्यक्रम शुल्क : रु. 3,000 / – प्रति व्यक्ति

सामान्य जानकारी

- इस प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए 10वीं पास होना अनिवार्य है।
- इस पाठ्यक्रम का ऑनलाइन शुल्क रु 3,000 / – है।
- यह पाठ्यक्रम 90 दिन तक संचालित होगा तथा इसका प्रमाण पत्र उपलब्ध होगा।
- यह प्रमाण पत्र बैंको व अन्य वित्तीय संस्थाओं से ऋण लेकर स्व रोजगार शुरु करने में काम आ सकता है।
- पाठ्यक्रम में पंजीकरण करने के बाद शुल्क का भुगतान ऑनलाइन या NEFT/RTGS के माध्यम से बैंक में कर सकते हैं।

  बैंक का नाम – आई.सी.आई.सी.आई., बीछवाल, बीकानेर

  खाता संख्या – 670101700150,

  IFSC Code -ICIC 0006701
- कोई भी पंजीकृत व्यक्ति व्यक्तिशः निदेशालय में आकर भी पाठ्यक्रम से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकता है या अग्रलिखित हेल्प लाइन पर कार्यालय समय में सम्पर्क कर सकता है – 0151 2250638
- पाठ्यक्रम में पंजीकरण हेतु मान्यता प्राप्त बोर्ड का दसवीं उत्तीर्ण प्रमाण पत्र व एक नवीनतम फोटो अपलोड करनी होगी।
- पाठ्यक्रम की परीक्षा हेतु ऑनलाईन प्रश्न उपलब्ध करवाये जायेंगे जिनका उत्तर आप ऑनलाईन दे सकते हैं।
- दूरस्थ शिक्षा माध्यम से कृषि शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षा व तकनीकी ज्ञान को उन लोगों तक पहुँचाना है जो उच्च संस्थाओं में प्रवेश लेकर पढाई करने में असमर्थ होते हैं तथा कृषि के ज्ञान को उपयोग करना चाहते हैं।

प्रेरणा एवं मार्गदर्शन

प्रो. आर. पी. सिंह
कुलपति
स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

पाठ्यक्रम संकलन व सम्पादन एवं लेखन

डॉ. उपेन्द्र कुमार मील
सहायक आचार्य
कृषि विज्ञान केन्द्र, बीकानेर

डॉ. शंकर लाल खीचड़
सहायक आचार्य
कृषि विज्ञान केन्द्र, जैसलमेर

डॉ. राम निवास दाका
विषय विशेषज्ञ
कृषि विज्ञान केन्द्र, पोकरण

प्रकाशक

डॉ. एस. एल. गोदारा
निदेशक

डॉ. आर. के. वर्मा
सहा. निदेशक

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मेव

मानव संसाधन विकास निदेशालय
स्वामी केशवानन्द
राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर - 334006

मुर्गी पालन

त्रैमासिक प्रमाण - पत्र पाठ्यक्रम

(दूरस्थ शिक्षा माध्यम)

पाठ्यक्रम विवरण एवं निर्देशिका

उत्तमा वृत्तिस्तु कृषिकर्मेव

मानव संसाधन विकास निदेशालय
स्वामी केशवानन्द
राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर - 334006

प्रो. आर.पी. सिंह
कुलपति

स्वामी केशवानन्द
राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय
बीकानेर-334006, राज.
Phone: +91-151-2250443, 2250488 (O)
email : vcrau@raubikaner.org

संदेश

राजस्थान के शुष्क एवं अतिशुष्क क्षेत्रों में मुर्गी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जो किसानों की आय में बढ़ोत्तरी का अतिरिक्त साधन बन सकता है। राज्य में रोजगार तलाश रहे युवा किसान इसे व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। कुक्कुट पालन का उद्देश्य बेरोजगार युवक–युवतियाँ कम लागत में अपना रोजगार स्थापित कर आत्मनिर्भर बन सकें तथा अपने परिवार का पालन पोषण कर सकें।

भारत के लगभग सभी हिस्सों में मुर्गी पालन अथवा कुक्कुट पालन किया जाता है। मुर्गी से हमें मांस एवं अण्डे प्राप्त होते हैं। घर में मुर्गी पालने पर उसके रख–रखाव एवं भोजन पर कोई व्यय नहीं करना पड़ता, क्योंकि खरपतवार की पत्तियाँ, घर का बचा हुआ भोजन, शाक सब्जियों के बेकार पत्ते और अनाज की छाँटन, आटा चक्की के इर्द–गिर्द बिखरा अनाज आदि को मुर्गी पालन के काम में लिया जा सकता है। इससे प्राप्त होने वाला मांस एवं अण्डे उत्तम किस्म का खाद्य है जिससे मनुष्य को कई प्रकार के पोषक तत्त्व प्रोटीन, लवण और विटामिन्स प्राप्त होते हैं। वर्तमान समय में विश्व के अन्य देशों की भांति भारत में भी अण्डा उत्पादन, मुर्गियों की संख्या तथा प्रति व्यक्ति अण्डा का उपभोग बढ़ रहा है।

इस दिशा में पहल करते हुए स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा मुर्गी पालन पर त्रैमासिक दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। जिसे पूर्ण कर किसान न केवल अच्छा लाभ प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित होंगे अपितु प्रति इकाई आय भी बढा सकते हैं।

इसके लिए मैं, विश्वविद्यालय के मानव संसाधन विकास निदेशालय के निदेशक डॉ. एस. एल. गोदारा एवं उनकी पूरी टीम को बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

मुझे विश्वास है कि 'मुर्गी पालन – दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम' युवाओं एवं प्रगतिशील किसानों के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

आर. पी. सिंह

डॉ. एस.एल. गोदारा
निदेशक

मानव संसाधन विकास निदेशालय
स्वामी केशवानन्द
राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय
बीकानेर-334006, राज.
Phone : 0151-2250638
email : dhrd@raubikaner.org

निदेशक की कलम से..

समय के साथ बदलते परिवेश में पशुपालन के क्षेत्र में मुर्गी पालन ने एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। मुर्गी पालन भी एक ऐसा व्यवसाय बन गया है जो एक अतिरिक्त आय का साधन प्रदान करता है। पिछले चार दशकों में मुर्गी पालन व्यवसाय क्षेत्र में शानदार विकास के बावजूद, कुक्कुट उत्पादों की उपलब्धता तथा मांग में काफी बड़ा अंतर है।

मुर्गी पालन का व्यवसाय अधिकतर अंडे एवं मांस उत्पादन के लिए किया जाता है। मुर्गी के अंडे तथा मांस में मानव पोषण के लिए सबसे आवश्यक तत्व, प्रोटीन बहुत अधिक मात्रा में पाया जाता है। वर्तमान बाजार परिदृश्य में मुर्गी उत्पाद उच्च जैविकीय मूल्य के प्राणी प्रोटीन का सबसे सस्ता उत्पाद है। इसके साथ ही साथ मुर्गी पालन से भूमि को भी उपजाऊ बनाया जा सकता है अगर मुर्गी पालन में उन्नत प्रजाति के चूजे, देखभाल, पौष्टिक आहार, बीमारियों से बचने का टीका एवं साफ सफाई सही ढंग से किया जाए तो एक बेहतर आय बनाई जा सकती है।

मुर्गी पालन के महत्व को ध्यान में रखते हुए स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा मुर्गी पालन पर त्रैमासिक प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने का निर्णय एक सकारात्मक पहल है, इस पाठ्यक्रम में मुर्गी पालन का महत्व, उनकी नस्लें, मुर्गी का आहार, आवास की व्यवस्था, पक्षियों में संगम की विधियां, मुर्गियों में प्रमुख बीमारियों व उनका प्रबंधन आदि के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई गयी है।

मुर्गी पालन पाठ्यक्रम सामग्री के लेखन, संकलन व सम्पादन के लिए पशु पालन विज्ञान के डॉ. उपेन्द्र कुमार मील, सहायक आचार्य, डॉ. शंकर लाल खीचड, सहायक आचार्य तथा डॉ. राम निवास ढाका, विषय विशेषज्ञ को हृदय से धन्यवाद देता हूँ। डॉ. आर. के. वर्मा, आचार्य (कृषि प्रसार एवं संचार), सहायक निदेशक, मानव संसाधन विकास निदेशालय, बीकानेर के अथक प्रयास से इस पाठ्यक्रम को इस स्वरुप में लाया जा सका है, इस पाठ्यक्रम सामग्री के टंकण व स्वरूपण मे श्री शिव कुमार जोशी (क्लर्क ग्रेड–प्रथम) का सहयोग प्रशंसनीय रहा, इस हेतु उन्हें धन्यवाद देता हूँ। प्रस्तुत चार इकाईयों में संकलित 'मुर्गी पालन– दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम' को पढ़कर युवा वर्ग, प्रगतिशील किसान एवं कृषि उद्यमी स्व–रोजगार एवं स्वालम्बन की ओर अग्रसर हो सकेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। मैं इस पाठ्यक्रम के कुशल संचालन की कामना करता हूँ।

एस.एल.गोदारा

भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषक के जीवन में कृषि के साथ ही पशु पालन उसको सहयोग प्रदान करता है। समय के साथ बदलते परिवेश में पशु पालन के क्षेत्र में मुर्गी पालन व्यवसाय ने एक महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है। पहले के समय मे लोग गाय, भैंस, भेड़ आदि जानवरों को पालते थे तथा इनसे लाभ कमाते थे परंतु आजकल के समय में मुर्गी का पालन भी एक ऐसा व्यवसाय बन गया है जो व्यक्ति को एक अतिरिक्त आय का साधन प्रदान करता है। यदि हम पशु पालन पर नजर डालें तो पाएंगे कि पोल्ट्री व्यवसाय ही एक ऐसा व्यवसाय रहा है जो अन्य पशु पालन व्यवसायों की तुलना में, विगत वर्षों में तीव्र गति से सतत् बढ़ रहा है। राजस्थान के शुष्क एवं अतिशुष्क क्षेत्रों में मुर्गी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जो आपकी आय का अतिरिक्त साधन बन सकता है। यह व्यवसाय बहुत कम लागत में शुरू किया जा सकता है। राज्य में रोजगार तलाश रहे युवा किसान इसे व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं । इसमें आपकी मेहनत और लगन पर सब कुछ निर्भर है क्योंकि इनमे संक्रमण का खतरा बहुत अधिक होता है इसलिये आप जितनी मेहनत से और अच्छे से इनकी देखभाल करेंगे इनसे उतना ही अधिक लाभ होगा।

पिछले चार दशकों में मुर्गी पालन व्यवसाय क्षेत्र में शानदार विकास के बावजूद, कुक्कुट उत्पादों की उपलब्धता तथा मांग में काफी बड़ा अंतर है। भारत विश्व में अण्डा उत्पादन में तीसरा सबसे बड़ा (67 बिलियन) तथा कुक्कुट मांस उत्पादन में पाँचवा सबसे बडा (3.2 मिलियन टन) उत्पादक देश के रुप में उभरा है। ग्रामीण क्षेत्रों में मुर्गी पालन का व्यवसाय किया जा सकता है और अधिक से अधिक लाभ कमाया जा सकता है। मुर्गी पालन का व्यवसाय अधिकतर अंडे एवं मांस उत्पादन के लिए किया जाता है। मुर्गी के अंडे तथा मांस में मानव पोषण के लिए सबसे आवश्यक तत्त्व, प्रोटीन बहुत अधिक मात्रा में पाया जाता है। वर्तमान बाजार परिदृश्य में कुक्कुट उत्पाद उच्च जैविकीय मूल्य के प्राणी प्रोटीन का सबसे सस्ता उत्पाद है।

इसके साथ ही साथ मुर्गियों के कूड़े (litter) से खेतों को उपजाऊ भी बनाया जा सकता है क्योंकि जितना एक गाय के गोबर से एक खेत को उपजाऊ बनाया जा सकता है उतना ही 40 मुर्गियों के बिटो से एक खेत को उपजाऊ बनाया जा सकता है। अगर मुर्गी पालन में सही प्रजाति के चूजे, देखभाल, पौष्टिक आहार, बीमारियों से बचने का टीका एवं साफ सफाई सही ढंग से किया जाए तो एक बेहतर आय बनाई जा सकती है। मुर्गी पालन व्यवसाय से बेरोजगारी भी काफी हद तक कम हुई है। आर्थिक स्थिति ठीक न होने पर बैंक से लोन लेकर मुर्गी पालन व्यवसाय की शुरुआत की जा सकती है और कई योजनाओं में तो बैंक से लिए गए लोन पर सरकार सब्सिडी भी देती है। कुल मिलाकर इस व्यवसाय के जरिए मेहनत और लगन से शिखर तक पहुँचा जा सकता है।

मुर्गी पालन पाठ्यक्रम को चार इकाईयों में विभक्त किया गया है :

इकाई 1 प्रस्तावना व मुर्गियों की नस्लें

इकाई 2 मुर्गी का आहार व आवास की व्यवस्था एवं कृत्रिम विधि से अण्डों से चूजे निकालने के सिद्धान्त

इकाई 3 पक्षियों में संगम की विधियाँ एवं ग्रामीण क्षेत्र में बटेर टर्की व एमू पालन

इकाई 4 मुर्गियों में प्रमुख बीमारियों व उनके रोकथाम एवं रिकॉर्ड रखना